शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सेनापति कृत 'कवित्त रत्नाकर' की रस योजना

डॉ. अतुल कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
भाषा विभाग (हिंदी)
सेंट क्लारेट महाविद्यालय
बैंगलोर, कर्नाटक, भारत

'कवित्त रत्नाकर' रीतिकालीन कवि सेनापति की अनुपम कृति है। यह रचना कुल पांच तरंगो में विभक्त है। जिसमें दूसरी तरंग श्रृंगार वर्णन की है। इसमें कुल 76 छंदों में रस परिपाक हुआ है। श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग, वियोग श्रृंगार का वर्णन शास्त्रीय रीति के अनुसार मिलता है। संयोग की अपेक्षा वियोग श्रृंगार का वर्णन बड़े ही मनोयोग से किया है। जिसमें वियोग के अंतर्गत काम दशाओं का व्यापक वर्णन है तथा पदों की योजना नायक, नायिका भेद के अनुसार की गयी है और उनका नखशिख वर्णन भी किया गया है। वियोग रस को ग्राह्य और उद्दीप्त बनाने के लिए प्रकृति का भी सहारा लिया है, जो छंदों को और उत्कर्ष प्रदान करते हैं। संयोग श्रृंगार के वर्णनों की संख्या ग्रन्थ में भले ही कम है, परन्तु जो थोड़े-बहुत वर्णन हैं, वह सजीव जान पड़ते हैं। 'कवित्त रत्नाकर' की दूसरी तरंग के अलावा भी अन्य तरंगो में श्रृंगार, वीर, रौद्र, भयानक तथा शांत रस इत्यादि छंदों में कई रसों का वर्णन मिलता है, परन्तु अन्य रसों की अपेक्षा श्रृंगार रस का वर्णन अधिक विस्तार से मिलता है। रीतिकाल में बड़े-बड़े रससिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ मिलती हैं, जिसमें रस के सभी पक्षों का अद्भुत वर्णन मिलता है। मतिराम, कुलपति मिश्र, चिंतामणि, केशवदास, देव इत्यादि ऐसे कवि हैं, जिन्होंने रीति परिपाटी का अनुसरण करते हुए रस के सभी अंगो पर रस ग्रंथो की रचना की है। कुछ ऐसे भी कवि हैं जिन्होंने रस को सौन्दय रूप में काव्य का अंग बनाया है तथा काव्य की शोभा बढ़ाने और रीति परंपरा के नियामक होने के सन्दर्भ में रसों का वर्णन किया है। उनमें बिहारी, सेनापति, ग्वाल, वृन्द और घनानंद जैसे कवियों की गिनती होती है। इन कवियों ने भले ही अपने ग्रंथो में रस के सम्पूर्ण अंगो का विस्तृत विवेचन न किया हो परन्तु रसों का जो सौन्दर्य इनकी रचनाओं में मिलता है, वह वास्तव में ग्राह्य योग्य है, जिससे उन्हें रस सिद्ध कवियों की परंपरा का अनुयायी माना जा सकता है। सेनापति उन्हीं कवियों में से एक हैं।

सेनापति ने 'कवित्त रत्नाकर' के आरम्भ में ही 'अनुपम रस ध्वनि' जिसका अर्थ 'असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि' है, उसका होना अपने काव्य में बताया है, 'सरस अनुप रस रूप यामै धुनि है'[1] उपर्युक्त पंक्ति में रस ध्वनि इसलिए माना गया है कि ध्वनि के विशद रुप के अन्तर्गत विवक्षित वाच्य ध्वनि के दो भेदों में से

"असंलक्ष्य व्यंग्य रस भावतदा भास भावशान्त्यादिरक्रमः।
भिन्नो रसधकंडकारादलंडकार्यतयास्थितः।"[2]

इस श्लोक से यह स्पष्ट है कि यहां रस, भाव, रसाभाव, भावाभास इत्यादि आ जाते हैं। वास्तव में कवि सेनापति ने संस्कृत के आचार्यों की ध्वनि का ही अनुसरण किया है :

"असंलक्ष्यक्रमोघोटः क्रमेण द्योतितः परः।
विवक्षिताभिधेयस्य ध्वनेरात्मा द्विधामतः।।"[3]

अनुमानतः सेनापति ध्वनि सम्प्रदाय के अनुयायी थे, किन्तु 'कवित्त रत्नाकर' के अध्ययन से यह बात व्यर्थ जान पड़ती है, क्योंकि ध्वनिवाद में व्यंजना शक्ति सब कुछ हैए और सेनापति पर उसका प्रभाव न के बराबर है। परन्तु सेनापति रस सम्प्रदाय से बहुत अधिक प्रभावित थे। 'कवित्त रत्नाकर' में शृंगार, वीर, रौद्र, भयानक, शांत आदि रस संबंधी रचनाएं मिलती हैं, किन्तु अन्य रसों की अपेक्षा शृंगार विस्तृत रूप में वर्णित है। शृंगार को रसों में रसराज कहा गया है। सेनापति कृत 'कवित्त रत्नाकर' की दूसरी तरंग श्रृंगार वर्णन की है। श्रृंगार रस के आलम्बन विभाव नायक-नायिका हैं। 'कवित्त रत्नाकर' में स्वाभाविक सौन्दर्य के वर्णन कम होते हुए भी सजीव है। सौन्दर्य वर्णन का एक दृश्य दर्शनीय है :

"लाल मन रंजन के मिलिने कौ मंजन कै,
चौकी बैठी बार सुखवति बर नारी हैं।
अंजन, तमोर, मनिए कंचन, सिंगार बिन,
सोहत अकेली देह, सोभा के सिंगारी है।।
ताल गीत बिन एक रूप के हरत मन,
परवीन गाइन की ज्यों अलापचारी है।"[4]

नायिका अपने शारीरिक सौन्दर्य से ऐसे सुशोभित हो रही है, जैसे ताल तथा गीत आदि से रहित किसी गायक की 'अलाप' सुन्दर प्रतीत होती है। दोनों की समता इसी में है कि दोनों स्वाभाविक सौन्दर्य से युक्त हैं। सेनापति की रस योजना का सौन्दर्य उनका अपना है, जो बाह्य उपकरण पर आश्रित नहीं है। सेनापति ने श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण किया है। परन्तु संयोग की अपेक्षा वियोग की ओर ध्यान अधिक दिया है। वे संयोग वर्णन में भी रसरूपता लाने में समर्थ थे। नायिका के सुन्दर नेत्र हृदय को हरण करने वाले हैं। हँस कर तिरछे नयनों से जब वह कटाक्ष करती है, तो वे हिरण के नेत्रों से भी अधिक सुशोभित होते हैं। रसिक लोग प्रायः यही मानते हैं कि वह कभी आँखों में अंजन न लगाए, नहीं तो वे नेत्र उसे और अधिक बेचैन कर देंगे। उन काले नैनो का आकर्षण देखने योग्य है।

हिय हरि लेत हैं, निकाई के निकेत, हंसि,
देत हैं सहेत, निरखति करि सैन है।
सेनापति हरिनी के दृगनतें अति नीकै राजै
दरद हैं हरत, करत चित चैन हैं।
दीरघ, ढरारे, अनियारे, नैक रतनारे,
कंज से निहारे कजरारे तरे नैन है।।"[5]

सेनापति नायिका के नेत्र सौन्दर्य के चित्रण में शृंगारी कवियों से कही भी कम नही हैं। शृंगार रस के वर्णन में कवि ने रस का आलंबन नायक-नायिका को माना है। ऐसे वर्णनों में विविध नायिका रूप एवं प्रकार देखने को मिलते हैं। इसमें मुग्धा, खण्डिता, वचन विदग्धा, परकीया, स्वकीया, प्रौढ़ा, स्वाधीनपति

का आदि का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया गया है। अवस्था विशेष की दृष्टि से मुग्धा नायिका का रूप चित्रण अवलोकनीय है :

"लोचन जुगल थोरे थोरे से चपल सोई,
सोभा मंद पवन चलत जलजात की।
पीत हैं कपोल तहा आई अरुनाई नई,
ताही छवि कर ससि आभा पात पातकी।
सेनापति काम भूप सोवत सो जागत है,
उज्ज्वल विमल दूति पैये गातगात की।"[6]

कवि ने यहाँ 'काम भूप सोवत सो जागत है' कह कर वयःसंधि को बड़ी उत्तमता से प्रकट किया है और प्रभात के रूपक की दृष्टि से भी यह नितान्त उचित जान है। खण्डित नायिका का वर्णन कई पदों में है। परन्तु सेनापति तत्कालीन अभिरुचि का परिचय देते हुए वचन-वक्रता के साथ सहृदयता का सरस प्रवाह भी किया है :

"बिन ही जिरह, हथियार बिन तांके अब,
भूलि मति जाहु सेनापति समझाए हौ।
ताकि हौ सुहाग, सब ही तै बड़ भाग जासौं,
करि अनुराग रस रीति सौं ढरत हौं।
करि डारी छाती घोर घाइन सौं राती-राती।
मोंहि धौ बतावो कौन भांति छूटि आए हौं।।"[7]

उपर्युक्त छन्द के अन्तर्गत शृंगार रस के आलम्बन विभाव के वर्णन में बाधिनि तथा मलहम पट्टी के माध्यम से वचन-वक्रता का सुन्दर स्वरुप चित्रित किया गया है। इसी प्रकार खण्डिता के दूसरे उदाहरणों में भी अधिक सहृदयता बरती गयी है या इसी का सुन्दर रुप चित्रित हुआ है। वचन-विदग्धा के वर्णन में कभी-कभी व्यंजना से अधिक सहायता मिलती है। किन्तु सेनापति ने इसके लिए विशेषतः श्लेषालंकार से सहायता ली है। इसी प्रकार कवि ने परकीया के विशेष चित्रण द्वारा स्वकीया के महत्व को भी स्वीकार किया है। रीतिकाल के अन्य कवियों की भांति सेनापति ने परकीया के ही चित्रण में विशेष तन्मयता दिखाई है। प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका वर्णन में स्वकीया की सुकुमारता सराहनीय है :

"फूलन सौं बाल की बनाई गुही बैनी लाल,
भाल दीनी बेदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाई ब्रज-भूषन जू
बीरी निज करकै खवाई अति हित है।"[8]

भारतीय नारी समाज के उत्तम आदर्श का यह सुन्दर उदाहरण है और ऐसे ही आदर्शों पर हिन्दू जन गौरवान्वित होते हैं। सेनापति के नख-शिख वर्णन पर भी कुछ छंद पाये जाते हैं। रूप वर्णन के प्रसंग में उन्होंने नखशिख वर्णन किया है। रूप वर्णन से उनकी परम्परित परिपाटी का पता चलता है। उपमानों द्वारा अंगों की नवीन शोभा झलकाने का प्रयास कवि ने किया है। सेनापति ने नखशिख वर्णन आंख से प्रारम्भ किया है। आंखों की उपमा खंजन, हरिण, मीन, मृगछौना तथा कमल से दी है। नखशिख के

अन्तर्गत कवि के केशों का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। 'नायिका के लटकते हुए केश ऐसे जान पड़ते हैं मानो अन्तरिक्ष में निराधार यमुना की धारा लटक रही हो। भ्रमरों के समूह इन केशों की थोड़ी-सी भी सुन्दरता नहीं रखते हैं। शेषनाग और मयूर इनकी तुलना में नहीं टिक पाते। इनको देखते ही प्रिय के सभी कष्ट दूर जाते हैं।'[9] इस पद में उपमानों का उपयोग नायिका के सौन्दर्य को अत्यधिक विकसित कर रहा है। सेनापति का ध्यान संयोग की अपेक्षा वियोग पर अधिक जान पड़ता है। सेनापति ने विरही की व्याकुलता का अतिशय वर्णन किया है। कहीं-कहीं नायिकाओं के वियोग में अश्रु आदि के चित्रण पाये जाते हैं :

"चले तैं तिहारे पिय बाढ़्यों है वियोग जिय,
रहियै उदास छूटि गयौ है सहाई सौं।
लोचन स्रवत जलए पल न परति कल,
आनंद की साज सब धरयों है उठाइ सौं।"[10]

इसी प्रकार अन्य कवित्त में भी नायिका अश्रु प्रवाहित करती दिखाई देती है। इस तरह के छंदों की रचना करना उतना सरल नही जितना देखने में लगता है। विरह वर्णनों में विरहियों की मानसिक दशा के सूक्ष्म विश्लेषण की बड़ी आवश्यकता पड़ती है। संसार के अनेक घटनाक्रमों को जोड़ने में भी कवि को पैनी दृष्टि रखनी पड़ती है। भाव व्यंजना में मानव हृदय के जिन भावों से कवि स्वयं परिचित होता है। उन्हीं के चित्रण में उसे पूरी सहायता मिल सकती है।

वीर रस के वर्णन में सेनापति ने प्रायः युद्धों के विस्तृत वर्णनों से काम लिया है। वह युद्ध वर्णन में उतने तत्पर नही दिखते जितना की उसकी तैयारी करने के वर्णन में दिखते है। सेनापति ने अपने काव्य में युद्ध की तैयारी करते राम और रावण की सेना के वीरों के उत्साह को बड़ी सजीवता के साथ चित्रित किया है। राम सेना एकत्रित करते हैं, हनुमान को सीता की खोज में भेजते हैंए सागर पर सेतु बांधने का आयोजन करते हैं। इन सबका चित्रण कवि ने बड़ी कलात्मकता के साथ किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में वीर रस का सुन्दर चित्रण हुआ है। उन्होंने रामरावण युद्ध में रावण की वीरता, शक्ति तथा साहस का उलना ही उत्कर्ष दिखाया है, जितना राम के वीरोचित गुणों का है। इसी कारण सेनापति के युद्ध वर्णन अधिक सजीव बन पड़े है। एक छंद में कवि ने कर्मवीर राम तथा बाहुबल के भंडार रावण की शक्ति का वर्णन किया हैए जिसमेंदोनों समान प्रतिद्वंदी दिखाये गये हैं :

इत बेद-बंदी वीर बानी सौंबिरद बोलें,
उत सिद्ध-विद्याधर, गाई रिझावत है।
इत सुर-राज, उत ठाढ़े है असुर-राज,
सीसदिगपाल, भुवपाल नवावत है।"[11]

इसी प्रकार युद्ध में भी दोनों के समान धैर्य, साहस, पराक्रम एवं उत्साहपूर्वक लड़ने का चित्र अंकित किया गया है। एक को सिंह तथा दूसरे को शार्दूल कहा गया है:

"वीर रस मदमाते, रन तैं न होत हाँते,
दुहू के निदान अभिमान चाप बान कौं।
सर बरषत, गुन कौ न करषत मानौं,

हिय हरषत, जुद्ध करत बखान कौं।
सेनापति सिंह्सारदूल से लरत दोऊ,
देखि धधकत दल देव जातुधान कौं।"[12]

रस वर्णन के अंतर्गत कवियों ने युद्ध वीर के अतिरिक्त दानवीर, दयावीर और कर्मवीर का भी उल्लेख किया है। सेनापति ने राम की दानवीरता पर भी कुछ छंद लिखे हैं। कवि ने कल्पना और सुन्दर युक्ति का प्रयोग का अपने इस छन्द को कितना मार्मिक बना दिया है। जिसमें राम ने विभीषण को किस प्रकार अभयदान दिया :

श्रावन कौंबीर, सेनापति रघुबीर जू की,
आयौ है सरन, छाड़ि ताहि मद-अंध कौ।
देखौ दानबीरता, निदान एक दान ही मैं,
कीने दोऊ दानए कौं बखाने सत्यसंध कौं।
लंकादसकंधर कीए दीनी है बिभीषण कौं,
संकाऊ बिभीषण की दीनी दसकंध कौं।।"[13]

सेनापति ने धर्मवीर का भी अच्छा उदाहरण दिया है। परशुराम के जनेऊ को देखकर राम ने अपनी शक्ति को समेट लिया। उन्हें ब्राह्मण समझकर धर्म-भावना प्रेरित हो उठे और उनसे युद्ध नहीं किया। यहाँ राम के धर्म वीरता के साथ मर्यादा का संयम भी बना हुआ है। युद्ध करते समय सेनापति ने वीभत्स, भयानक रौद्र रस आदि की भी व्यंजना की है। वीभत्स का उदाहरण युद्ध वर्णन में तो नहीं शृंगार रस के एक छन्द में मिलता है जहाँ सुकुमारी कोमलांगी नायिका को बाघिन बना दिया गया है :

बिन ही जिरह, हथियार बिन ताके अब,
भूलि मति जाहू सेनापति समझाए हौ।
कीने कौंन हाल! वह बाघिन है बाल! ताहि,
कोसति हौं लाल, जिन फारि-फारि खाए हौ।"[14]

सेनापति के भक्ति वर्णन में शान्त रस का सुन्दर वर्णन हुआ है। शान्त रस के स्थायी भाव है शम तथा निर्वेद। सेनापति के छंद में निर्वेदजन्य शान्त रस मिलता है :

किनौ बालापन बालकेलि मैं मगन मन,
लीनौ तरुनापै तरुनी के रस तीर कौं।
अब तू जरा मैं परयौ मोह पींजरा मैं,
सेनापति भुज रामै जौ हरैया दुख पीर कौ।'[15]

जहां भगवान राम का गुणगान है और उनकी भक्ति करने का आग्रह किया गया है। वहाँ भी शान्त रस है :

"सौवे सुख सेनापति सीतापति के प्रताप, जाकी सब लागै पीर ताहि रघुवीर ही।"[16]

राम रसायन के अनेक छंदो में जहां दैन्य भावना व्यक्त है, वहाँ शान्त रस है। राम को परम ब्रह्म मानकर उनके गुणों का गान कर कवि उन्हें शरणागत वत्सल कहकर उन पर अपनी आस्था प्रकट करते हैं। वह छन्द शान्त रस का सुन्दर दृष्टान्त है :

"परम ज्योति जाकी अनंत, रमि रही निरंतर,
आदि, मध्य अरु अंत, गगन, दस-दिसि, बहिरंतर।
सेनापति आनंद घनए रिद्धि-सिद्धि मंगल करन,
नाइक अनेक ब्रम्हांड कौंए एक राम संतत सरन।"[17]

रस ग्रंथो के प्रणेता न होने पर भी सेनापति ने रीति कवियों की भांति सभी प्रधान रसों का समुचित प्रयोग अपने काव्य 'कवित्त रत्नाकर' में किया है। हास्य रस भी उनकी लेखनी से नही छूट सका है। कवि ने अपने संग्रह काव्य ग्रंथ में महाकाव्य के तीनों प्रधान रसों शृंगार, वीर और शांत के अतिरिक्त अन्य रसों के प्रयोग में भी कुशलता दिखाई हैं। अन्य प्रधान रसों के अतिरिक्त शांत रस का परिपाक इनके काव्य में बहुत सुन्दर और अलौकिक रूप से हुआ है निश्चित रूप से इनके रस वर्णन को देखकर इन्हें रस सिद्ध कवि की उपमा दी जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 पंडित उमाशंकर शुक्ल, संपा. कवित्त रत्नाकर (पहली तरंग) छन्द संख्या 7
2 मम्मट-काव्य प्रकाश, चतुर्थोल्लास, श्लोक 26
3 आनंदवर्धन, ध्वन्यालोक, द्वितीय उद्योत, श्लोक 21
4 कवित्त रत्नाकर, दूसरी तरंग, छन्द संख्या, 54
5 वही, छन्द संख्या 5
6 वही, छन्द संख्या 26
7 वही, छन्द संख्या 35
8 वही, दूसरी तरंग 36
9 वही, छन्द संख्या 7
10 वही, छन्द संख्या 22
11 वही, चौथी तरंग, छन्द संख्या 46
12 वही, छन्द संख्या 58
13 वही, छन्द संख्या 40
14 वही, दूसरी तरंग, छन्द संख्या 35
15 वही, पांचवी तरंग, छन्द संख्या 12
16 वही, छन्द संख्या, 16
17 वही, पहली तरंग, छन्द संख्या 1